International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 13 Issue 09, September- 2023
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

वर्तमान युग में गांधीवादी विचारों की प्रासंगिकता

प्रो0 विभा चौहान
एसोसिएट प्रोफेसर
एजुकेशन डिपार्टमेंट
जे0एस0 यूनिवर्सिटी

शोधार्थी
सुशमलता यादव

महात्मा गांधी, राष्ट्रपिता, बापू, शांतिदूत आदि पदनामों से अभिहित मोहनदास करमचंद गांधी के व्यक्तित्व, विचार, प्रभुत्व और प्रभाव के बारे में, वह चाहे समर्थन में हो या विरोध में, उनकी प्रशंसा में हो या निंदा में, बहुत सी बातें होती रही हैं। जहां एक ओर आइंस्टाइन जैसे व्यक्ति ने राजनीतिक इतिहास में गांधीजी की उपलब्धियों को अभूतपर्वू करार दिया था और कहा था, ''भावी पीढ़ियों के लिए यह विश्वास करना कठिन होगा कि हाड़–मांस का बना एक ऐसा आदमी भी कभी इस धरती पर विचरण करता था'' तो दूसरी ओर विंस्टन चर्चिल जैसा राजनीतिज्ञ उन्हें 'नंगा फकीर' कहकर मजाक उड़ाता था। भारत में ही जहां डॉ. अम्बेडकर उन्हें संदेहास्पद और अविश्वसनीय बताते थे, तो कट्टर हिंदू और मुस्लिमवादी जमातों के लिए वे अपने दौर के सबसे बड़े शत्रु थे।

फिर भी तमाम प्रशंसाओं और आलोचनाओं के बीच यह निर्विवाद है कि साम्राज्यवादियों की धन लिप्सा और विस्तार लिप्सा की दानवी प्रवृत्ति और इनकी सत्ता के उत्पीड़न की शिकार जनता को मुक्ति की राह दिखाने के लिए गांधीजी विश्वमंच पर एक महामानव के रूप में उभरे और उन्होंने स्वातंत्र्तोन्मुखी जनसंघर्षो को व्यापक रूप से प्रभावित किया। मार्टिन लूथर किंग से लेकर नेल्सन मंडेला और आंग सान सू की तक अपनी–अपनी तरह से मुक्ति संघर्ष चलाने वाले राजनेताओं की कई पीढ़ियां उनसे प्रभावित हुई सफल भी हुई। अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा अपने प्रेरणा–स्रोत के रूप में मार्टिन लूथर किंग के साथ–साथ प्रायः गांधीजी की वर्तमान में प्रासंगिकता के प्रश्न पर विचार करने से पहले गांधीजी के विचारों एवं उनके आदर्शों को समझना जरूरी है। महात्मा गांधी का जीवन–दर्शन इच्छाओं की उच्छृंखलता के विरूद्ध उन पर नियंत्रण तथा भौतिकता की पूजा करने के विरूद्ध आध्यात्मिक साधना है। सत्य और अहिंसा इसके सक्षम औजार हैं। जो अपने ऊपर विजय प्राप्त कर लेता है, वही दुनिया

पर विजय प्राप्त कर सकता है। हैरत की बात है कि तीस–चालीस वर्षों तक भारत के स्वतंत्रता संघर्ष का नेतृत्व करते हुए और सक्रिय राजनीतिक जीवन बिताते हुए भी गांधीजी मूलतः एक नैतिक शिक्षक का कार्य करते रहे। सत्य और अहिंसा उन्हें इतने प्रिय थे कि उनकी कीमत पर उन्हें स्वाधीनता भी नहीं चाहिए थी। हजारों लोगों ने अपने व्यक्तिगत जीवन में गांधीजी के इस आदर्श को उतारा। लाखों लोगों ने गांधीजी की इस सीख में अपना विश्वास प्रकट किया और करोड़ों लोग गांधीजी के भक्त और प्रशंसक बने। भारतीय इतिहास ने तीन–चार दशकों की इस अवधि को 'गांधी युग' के नाम से दर्ज किया। गांधीजी एक समाजवादी थे क्योंकि वे व्यक्तिगत असमानता का पूर्ण विरोध करते थे। परन्तु उनका समाजवाद स्वदेशी पर आधरित था, जिसके तहत उन्होंने राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि सभी क्षेत्रों में समानता लाने पर बल दिया। गांधीजी ने समाज के सभी वर्गों के उत्थान के लिए रचनात्मक कार्यों को करने के साथ–साथ तीन महत्त्वपूर्ण सिद्धांतों–सत्याग्रह की अवधारणा, सर्वोदय का सिद्धांत वन्यासधारिता के सिद्धांतों का भी प्रतिपादन किया। यद्यपि सर्वोदय की अवधारणा भारतीय संस्कृति में कोई नई अवधारणा नहीं है। 'वसुधैव–कुटुम्बकम्' का आदर्श वैदिक काल से ही चला आ रहा है। इसी आदर्श को वैश्विक स्तर पर लाने का श्रेय गांधीजी को जाता है। सर्वोदय से तात्पर्य समाज के सभी वर्गों एवं व्यक्तियों के कल्याण से है। यह नवीन सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक मूल्यों को जन्म देता है। सर्वोदयी अवधारणा के अंतर्गत स्वतंत्रता व समानता को सर्वोच्च स्थान प्रदान किया गया है, जो आधुनिक लोक कल्याणकारी राज्य के प्रमुख आधार हैं। लोकतंत्र का सार भी इसी बात में ही छुपा हुआ है कि सारी जनता को सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक क्षेत्र में पर्याप्त स्वतंत्रता एवं समानता की स्थिति प्राप्त हो।

गांधीजी के अनुसार, श्रम मानवीय जीवन को गरिमा प्रदान करता है, जबकि पूंजी स्वार्थ का प्रतीक है। उनके अनुसार सारी संपत्ति परमेश्वर की है। मनुष्य केवल इसका संरक्षक है। अतः पूंजीपतियों के पास आवश्यकता से अधिक धन को जनहित के कार्यों में लगाना उनका कर्त्तव्य है। गांधीजी का मानना था कि सामाजिक व्यवस्था का आधार घृणा, संघर्ष अथवा हिंसा नहीं बल्कि प्रेम तथा विश्वास है। वे समाज की स्थापना को नैतिक मूल्यों पर स्वीकार करते थे।

अतः पूंजीपतियों व अमीरों को यह विश्वास दिलाया जाए कि उनके पास जो आवश्यकता से अधिक धन है, वह समाज की धरोहर है तथा उसे उन्होंने इसलिए रखा है कि उसका उपयोग जनहित एवं कल्याणकारी कार्यों में हो सके। इस प्रकार गांधीजी का न्यासधारिता का सिद्धांत प्रेम, विश्वास तथा नैतिकता पर आधारित है, जो गांधीजी की अपरिग्रह की धारणा पर विकसित हुआ है।

भारतीय परंपरा की विरासत तथा पश्चिमी विचारकों के माध्यम से गांधीजी को ऐसी विचार–राशि मिली, जो आधुनिक पश्चिमी सभ्यता की संतान 'पूंजीवाद' को ठुकराती थी और साम्राज्यवाद को भी, जिसने युद्ध तथा नसंहारों के माध्यम से खुद को स्थापित किया था। यहां से आगे बढ़कर उन्होंने लगभग पूरी तरह से पश्चिमी सभ्यता को ही ठुकरा दिया। पश्चिमी सभ्यता का इस तरह ठुकराया जाना, उस भारतीय सभ्यता की श्रेष्ठता के दावे का प्रस्थान बिंदु बन गया, जिसमें न तो पूंजीवाद था और न ही जिसने अभी साम्राज्यवाद का रूप ग्रहण किया था। इस तरह भौतिक दृष्टि से भारतीय सभ्यता की गरीबी ही गांधीजी के लिए उसकी श्रेष्ठता के दावे का आधार बन गयी।

गांधीजी स्त्री–पुरुष समानता में विश्वास करते थे। उनका मानना था कि पुरुष जो कुछ भी कर सकते हैं, स्त्रियां भी वह सब कर सकती हैं। एक बार एक पत्रकार ने गांधीजी से पूछा कि अगर अहिंसा के अंतर्गत युद्ध की इजाजत होती तो क्या औरतें भी सैनिक हो सकती थीं ? गांधीजी का जवाब था–''औरतें, पुरुषों से बेहतर सैनिक तथा जनरल साबित होंगी।'' वर्तमान में सेना में औरतें अत्यंत महत्त्वपूर्ण पदों पर हैं भी।

गांधीजी ने जिस आर्थिक विचार व व्यवस्था को 'स्वदेशी' नाम दिया, वह 'परस्पर स्वावलम्बन' पर आधारित है। इसकी दृष्टि समाज के हर तबके और हर स्तर पर है। गांधीजी के स्वदेशी ढांचे के अनुसार, हर व्यक्ति तथा समाज की हर इकाई अपने अन्न, वस्त्र, आवास, स्वास्थ्य, शिक्षा और जीवन के आनंद के लिए किसी पर निर्भर न रहेगा।

आज बाजार के सिद्धांतों का चारों ओर बोलबाला है और सब कुछ उसके हवाले करने की प्रक्रिया जारी है, जबकि उस बाजार का सिद्धांत उत्पादक और उपभोक्ता के बीच काफी दूरी

बनाए रखने का है। वह अपनी शर्तें खुद तय करता है, उसमें समाज की कोई भूमिका नहीं होती। उसकी प्राथमिकता में केवल मुनाफा होता है और मुनाफाखोरी से शोषण बढ़ता है ? समाज सेवा या राष्ट्र सेवा नहीं, बल्कि अधिकतम मुनाफा कमाने की प्रवृत्ति और गलाकाट प्रतिस्पर्धा ने ही उसे सफलता के शीर्ष तक पहुंचाया है। इसलिए गांधीजी आज भी प्रासंगिक हैं।

गांधीजी ने आत्मनिर्भरता का आधार स्वदेशी को माना। गांधीजी का स्वदेशी सिद्धांत अपने पड़ोसी की सेवा और उसका उपयोग है। सरकार की सभी रोजगार योजनाएं मोहताजगीरी की योजनाएं हैं। इसके बजाय आज देश के युवाओं को स्वावलंबी बनाने वाली योजनाओं और आर्थिक ढांचे की जरूरत है। गांधीजी का मानना था कि अगर व्यक्ति मोहताज नहीं है तो देश मोहताज नहीं होगा। परंतु वर्तमान में इसका उल्टा हो रहा है और इसकी वजह से भ्रष्टाचार, अपराध और हिंसा–विद्रोह के मामले देश में दिन–ब–दिन बढ़ते जा रहे हैं। गांधीजी ने वर्ष 1917 में कहा था कि ''पाश्चात्य देशों ने ऐसी व्यवस्था खड़ी की है, जिसके लिए उनको दुनिया भर में अपने गुलाम बनाने पड़ेंगे क्योंकि वे अपने संसाधनों से अपना जीवन–तंत्र नहीं चला सकते। गरीब पैदा करना, इस तंत्र का स्वभाव है। जब बहुत बड़ा वर्ग गरीबों का होगा, तब एक छोटा वर्ग राजकर्ताओं का होगा।''

हिंदुस्तान की व्यवस्था भी उसी की अंगीभूत हो गयी है। आर्थिक विकास के लिए शहरों का बढ़ते जाना भी गांधीजी के विचारों के खिलाफ है। जरूरत गांवों को समृद्ध करने की है। हमारे राजनेताओं ने गांधीजी को नकार कर देश के असली विकास को ही नकारा है। अब वापस लौटकर गांधीवादी आर्थिक रास्ते पर चलते हुए ऐसे अर्थतंत्र की दरकार है, जिसकी पहुंच देश के अंतिम व्यक्ति तक हो। यह सोचने की जरूरत है कि ग्रामीणों के हाथों में मजदूरी की जगह उद्योग कैसे पहुंचे ? मौजूदा हालात को सुधारने में देश के बौद्धिक वर्ग की बड़ी भूमिका हो सकती है।

आज राज्य की चिंता में न गरीब कहीं है, न गांव, न सादगी कहीं है, न आत्मशुद्धि, न ही अहिंसा की चर्चा है और न सत्य की। हां, ईमानदारी और सादगी का ढोंग जरूर किया जाता

रहा है। कभी–कभी सत्याग्रह का प्रहसन भी दिखाई देता है, जो गांधीजी के रास्ते का अनुसरण कम, उसका मजाक बनाना ज्यादा प्रतीत होता है। जिस समय (पीएच.डी. शोधार्थी), शिक्षा संकाय, टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर (राजस्थान) (व्याख्याता), संस्कार इंटरनेशनल महिला टी.टी. कालेज, हनुमानगढ जं. (राजस्थान)

भारतीय राज्यतंत्र एफ.डी.आई. के माध्यम से विदेशी पूंजी को आमंत्रित करने के लिए दंडवत पड़ा हुआ हो, उस समय गांधी का प्रसंग भी बेतुका लगता है। सत्ता चाहे क्रांति के माध्यम से प्राप्त की गयी हो या अहिंसक सत्याग्रह के जरिए, विदेशी हाथों से देशी हाथों में अंतरित हुई हो या प्रत्यक्षतः जनता द्वारा चुनी गयी हो, अंततः पूंजी की गोद में क्यों जा बैठती है और क्यों अपने ही लोगों के शोषण–दोहन पर उतर आती है ? आज की पीढ़ी को इस प्रश्न का उत्तर भी खोजना है और वह रास्ता भी, जिसके जरिए ऐसी राजसत्ता स्थापित की जा सके जो पूंजी की दलाली करने के बजाए सचमुच जनता के हित में, जनता के लिए खड़ी रहे। पिछली सदी ने गांधीजी को देखा तो मौजूदा सदी अपने भटकावों के बीच उन्हें तलाश रही है। नीति–नैतिकता, मूल्य–बोध और व्यवहार की अब भी सबसे बड़ी कसौटी का नाम है महात्मा गांधी। पर क्या इस कसौटी को साथ लेकर लालसा, प्रतिस्पर्धा और किसास की आधुनिक चुनौती को जीता जा सकता है ? अहिंसक जीवन–मूल्य भोग की संस्कृति की अवधारणा को ही खारिज करता है, तो क्या आज गांधीजी को पूरी तरह स्वीकार पाना मुश्किल है या फिर इसकी दरकार ही नहीं है ? क्या जीवन और विकास की नई सीख एक ऐसी दिशा खोज पाने में सक्षम है, जिसमें मानव अस्मिता को कोई खरोंच न लगे ?

21वीं सदी में गांधी क्यों ? इस सवाल का जवाब एलविन टॉफलर की बातों से नजर आता है–"जरूरत है मनुष्य जाति को सुलभ नवीनतम विज्ञान और गांधी की कल्पना के ग्राम–गणतंत्र के बीच एक नया संतुलन हासिल करने की। इसे हासिल करने के लिए समाज का पूर्ण रूपांतरण जरूरी है। रूपांतरण सामाजिक मूल्यों और प्रतीकों का, शिक्षा व्यवस्था और ऊर्जा प्रबंधन का, वैज्ञानिक और औद्योगिक शोध का और तमाम संस्थाओं तथा प्रक्रियाओं का।" विनोबा भावे ने कहा था कि "यह आदमी कोई पुरानी किताब नहीं था, जिसमें कुछ नया न जुड़े, जिसके बस नए संस्करण निकलते रहे। गांधीजी आज होते तो क्या करते, क्या न

करते, यह सही सवाल और तरीका नहीं है। उनसे विचार मिला, ऐसा मानकर स्वतंत्र चिंतन करना चाहिए''। गांधीजी के पास रणनीतियां नहीं, नीतियां हैं। इसलिए पूंजी के लिए पगलाए इस समाज में और पूंजी के लिए भिखमंगी हो रही सरकारों के इस दौर से गांधीजी कहते हैं, ''सामाजिक विकास व मानवीय संतोष के लिए जरूरी है कि पूंजी बने, पूंजी बढ़े और पूंजी बंटे। ये तीनों कदम जो समाज सुनिश्चित करेगा, वही संपन्नता, सहकार और शांति का मीठा फल चख पाएगा।'' यहीं आकर साम्यवाद ऐसा फिसला कि टूटकर विखर गया। यही आकर जवाहरलाल रेहरू की मिश्रित अर्थव्यवस्था ने घुटने टेक दिए यहीं आकर माओ का चीन जमींदोज होकर पूंजीवाद की चरण वंदना करने लगा और यहीं आकर पूंजीवादी व्यवस्था के शिखर यूरोप–अमेरिका ढहते नजर आ रहे हैं। इसलिए गांधीजी ने पूंजी को लगातार योजनाबद्ध तरीके से बांटते रहने की हिदायत दी थी। दर्द है तो इस बात का कि वर्तमान अर्थव्यवस्था में पूंजी की भूमिका मात्र शोषक की है। इसलिए लोग पूंजी के शिकार हो रहे हैं। ऐसे में हमें फिर गांधीजी के पास ही आना होगा। आज गांधीजी हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन वक्त जब भी हमारी उपेक्षा करता है, तो समस्याओं के मोड़ पर उनके विचार हमारे साथ हो लेते हैं।

16 अक्टूबर 1947 को गांधीजी ने कहा था, ''मैं तो कहते–कहते चला जाऊंगा लेकिन किसी दिन मैं याद आऊंगा कि एक आदमी जो कहता था, वह ठीक था।''

सन्दर्भ

1. Patavisitaramiya, History of the Indian Natioanl Congress, S.Chand and company,
1. New Delhi, 1969,
2. Aprna Basu, The role of Women in the Indian Struggle for the Freedom, Vikas
3. Publisher, New Delhi, 1976.
4. Usha Bala- Indian Women Freedom Fighters (1857-1947), Manmohan Publishers,
5. New Delhi, 1986.
6. Bipan Chandra and Barun De, Freedom Struggle, NBT 1927.
7. Nawax B. Mody, Women in India's Freedom Struggle, Allied Publisher Pvt. Ltd., 2000
8. ड्रयूज.सी.एफमहात्मा
9. गांधी एट वर्क, न्यूयार्क, द मैकमिलन कंपनी, 1931
10. महात्मा गांधी : हिज़ ओन स्टोरी 1930
11. महात्मा गांधीज़ आइडियाज़ 1930
12. एशे ज्योफ्री
13. गांधी : ए स्टडी इन रिवॉल्यूशन न्यूयार्क स्टेन एंड डे, 1968,